साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 08
August 2017

हम जख्म काँटों की क्या गिनवाएं

राजकुमार शर्मा

हम जख्म काँटों की क्या गिनवाएं
हमने तो चोट फूलों से खाए
हवा के झोकों ने है लुटा
और ललचाया है कलि घटा
अब तू ही बता
मई क्या करूँ
जिउ या मरू
आज कल में
पल पल में
मर गया हु सौ बार
फिर भी
जी करता है जीने का
एक बार
धुतकारा गया
ठुकराया गया
मुहब्बत की जगह
मिली है नफरत
हर वक़्त

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 08
August 2017

मेरे आंसू नहीं
बहते है रक्त
फिर भी चाहता
हंसू एक बार
करे कोई प्यार
मत पूछ मेरे यार
मेरी हसरत क्या है
दिल की बात
जुबान से नहीं कहते
एक बार तो देख ले
मेरे आँखों में यार